संपादकीय

सभी पाठकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दो वर्ष पूर्ण होने पर बधाई! आप सभी जानते हैं कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस नीति को 29 जुलाई 2020 को देश की शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव की पहल के रूप में लागू किया गया था। इस नीति के लागू होते ही सभी इसके क्रियान्वयन में जुट गए। साथ ही, शिक्षा मंत्रालय द्वारा इस नीति के क्रियान्वयन का लक्ष्य एवं समय आधारित क्रियान्वयन योजना का दस्तावेज *सार्थक* भी बनाया गया। यह दस्तावेज राष्ट्रीय स्तर से स्थानीय स्तर तक की समस्त संस्थाओं या संगठनों और हितधारकों को अपनी ज़िम्मेदारियों एवं अपेक्षित प्रतिफलों की प्राप्ति के लिए मार्गदर्शित करता है। इसी कड़ी में, शिक्षा व्यवस्था में विशेषकर विद्यालय शिक्षा में बदलाव दिखाई देने लगे हैं, जिनमें बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान पर निपुण भारत, विद्या प्रवेश (तीन माह का गतिविधि आधारित विद्यालय प्रवेश मॉड्यूल), निष्ठा 2.0, राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (एनडीईएआर), स्ट्रक्चर्ड असेसमेंट फ़ॉर एनालिसिस लर्निंग (सफल) आदि) शामिल हैं। इन्हीं सरोकारों से जुड़े लेखों एवं शोध-पत्रों को पत्रिका के इस अंक में शामिल किया गया है।

भारतीय प्राचीन ग्रंथों एवं साहित्य में निहित शैक्षिक संकल्पनाओं के अध्ययन एवं चिंतन पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विशेष बल दिया है। इसी दर्शन को लेख 'वर्तमान में योगवासिष्ठ शिक्षा की प्रासंगिकता— एक समग्र दृष्टिकोण' में प्रस्तुत किया गया है।

वहीं 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विद्यालयी शिक्षा में जेंडर समावेशन' पर आधारित लेख में बताया गया है कि समाजीकरण के परिप्रेक्ष्यों में विद्यालय एक महत्वपूर्ण अभिकर्ता है, जो बच्चों को जेंडर असमानता के प्रति संवेदनशील बनाता है। इस हेतु शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया को जेंडर पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता को संबोधित करते हुए जेंडर समावेशी विद्यालयी वातावरण बनाना आवश्यक है।

विद्यालयी शिक्षा के दौरान ग्रीष्मकालीन अवकाश को लेकर विद्यार्थियों में विशेष उत्साह पाया जाता है। इस अवकाश के रचनात्मक उपयोग के लिए विभिन्न संस्थाएँ विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन करती हैं। इन्हीं शिविरों में एक मेंटर द्वारा प्राप्त अनुभवों को लेख 'ग्रीष्मकालीन शिविर— रचनात्मक गतिविधियों के आयोजन का अनुभव' में प्रस्तुत किया गया है।

'आनंद निकेतन विद्यालय में 'स्वयंपाक' का प्रयोग' नामक लेख महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत 'नई तालीम' पर आधारित एक विरासत के रूप में संचालित आनंद निकेतन विद्यालय के एक प्रयोग 'स्वयंपाक' को साझा करता है। इस लेख में बताया गया है कि कैसे इस विद्यालय में 'स्वयंपाक' की गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को विषयों का ज्ञान, मूल्य और कौशल सिखाए जाते हैं?

पत्रिका में लेख 'मस्तिष्क आधारित अधिगम— सीखने-सिखाने का एक नवीन दृष्टिकोण' मस्तिष्क आधारित अधिगम के सिद्धांतों, मूल विधियों एवं उसके शैक्षिक निहितार्थ से अवगत कराता है। साथ ही, यह भी बताता है कि मस्तिष्क-आधारित अधिगम का उपयोग किस प्रकार शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में किया जाए?

बहुसांस्कृतिक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों से परिचित कराती है। साथ ही, विद्यार्थियों में अपनी संस्कृति, संवेदनशीलता और दूसरों की संस्कृति के प्रति सहानुभूति एवं सम्मान की भावना भी पैदा करती है। इसी पर आधारित लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में बहुसांस्कृतिक शिक्षा' इस अंक में शामिल किया गया है।

आज की युवा पीढ़ी यौन शिक्षा के अभाव तथा मिथ्या धारणाओं के जाल में फँसते हुए भटक गई है। इसलिए, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में औपचारिक यौन शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके माध्यम से बच्चों में संवैधानिक एवं सामाजिक मूल्यों को आत्मसात करते हुए शारीरिक संबंधों के प्रति समझ विकसित की जा सकती है। इसी विमर्श को लेख 'विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य के लिए यौन शिक्षा' में प्रस्तुत किया गया है।

विद्यार्थी जीवन में आगे बढ़ने के लिए करियर निर्देशन एवं परामर्श की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह निर्देशन और परामर्श विद्यार्थी को सामाजिक एवं आर्थिक मनुष्य बनाने के लिए समय-समय पर निरंतर सहायता करता है। इसी पर केंद्रित लेख 'विद्यार्थी जीवन में करियर निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका' पत्रिका में शामिल किया गया है।

'अरुणाचल प्रदेश में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी' नामक शोध-पत्र में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम-कामेंग जिले के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति और अध्यापकों के मतों पर आधारित शोध अध्ययन दिया गया है। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी के प्रति अभिवृत्ति में अधिवास एवं विद्यालय के प्रकार तथा जनजातीय स्थिति के आधार पर सार्थक भिन्नता है। जबकि अध्यापकों का मत है कि जिले में अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों को ही शिक्षा का माध्यम होना चाहिए।

पत्रिका में शामिल एक अन्य शोध-पत्र माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के लिए 'रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी का निर्माण एवं मानकीकरण' दिया गया है। इसमें शोधार्थियों द्वारा रचनावादी शिक्षण उपागम प्रतिक्रिया मापनी के निर्माण की वैज्ञानिक प्रक्रिया को बताया गया है।

'पॉक्सो अधिनियम 2012 के आधार पर विकसित विद्यालयी दिशा-निर्देशों के प्रति अध्यापकों की जागरूकता का अध्ययन' पर आधारित शोध-पत्र में दर्शाया गया है कि अध्यापकों में इस अधिनियम के विभिन्न आयामों के प्रति पर्याप्त जागरूकता नहीं है। साथ ही, विद्यालय भी इससे संबंधित दिशा-निर्देशों का गंभीरता से पालन नहीं कर रहे हैं। इसके अलावा, अध्यापकों को इस अधिनियम के बारे में प्रशिक्षण देने संबंधी प्रयास भी संतोषजनक रहे।

पत्रिका में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अनुशंसित 'चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के प्रति अध्यापक-प्रशिक्षकों के अभिमत के